राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु, सिद्धार्थनगरम्

षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

Department of Sanskrit

Siddharth University, Kapilvastu

Siddharthnagar, Uttar Pradesh, India- 272202

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु,
षण्मासससत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)
पाठ्यक्रमपरिचय:

परास्नातक संस्कृत का यह पाठ्यक्रम चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम CBCS प्रोग्राम है |
यह पाठ्यक्रम 2 वर्षीय और 4 सेमेस्टर का होगा, जिसमे कुल १०० क्रेडिट होंगे।

छात्र को **प्रथम सेमेस्टर** में 4 अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट(प्रत्येक ५ क्रेडिट) एवं अन्य संकाय का एक लघु पाठ्यक्रम ४ क्रेडिट का पढ़ना होगा तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जिसके ४ क्रेडिट होंगे इस प्रकार प्रथम सेमेस्टर कुल २८ क्रेडिट का होगा |

द्वितीय सेमेस्टर में ४ अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** ४ क्रेडिट की करनी होगी इस प्रकार द्वितीय सेमेस्टर कुल २४ क्रेडिट का होगा |

तृतीय एवं चतुर्थ के प्रत्येक सेमेस्टर में -
२ अनिवार्य पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) और २ ऐच्छिक पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जो ४ क्रेडिट की होगी | प्रत्येक सेमेस्टर ऐच्छिक पाठ्यक्रम A (वेद), B (व्याकरण), C (साहित्य) और D (दर्शन) वर्ग में विभक्त होगा | यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम केकिसी एक वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे उसी वर्ग का ही चयन करना होगा, जिसके आधार पर उपाधि की विशेषज्ञता प्रदान की जाएगी

उदाहरणार्थ - यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम के A वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे A वर्ग का ही चयन करना होगा |
इस प्रकार तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर २४+२४= कुल ४८ क्रेडिट के होंगे |

नोट: प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के प्रत्येक प्रश्नपत्र ७५ अंक लिखित और २५ अंक आंतरिक मूल्यांकन =१०० अंक के होंगे |

Category – B

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :**
DSNC - 602	व्याकरणम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस कोर्स का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत व्याकरण प्रक्रिया का सम्यक् अवबोधन कराना जिससे शोधार्थी शोध प्रबंध लेखन में होने वाली सामान्य एवं दीर्घ त्रुटियों से बच सकें | संस्कृत अजन्त-हलन्त शब्दरूपों, धातु रूपों, संधि, समास एवं प्रत्ययों का सम्यक् ज्ञान प्रदान करना |

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात शोधार्थी संस्कृत भाषा के व्याकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे और शोध प्रबंध लेखन में होने वाली व्याकरणात्मक त्रुटियों से बच सकेंगे, क्योंकि संस्कृत वांग्मय का बहुत विशाल कोष है | व्याकरण संस्कृत वांग्मय रुपी ताले की वो चाभी है जिसके माध्यम से संस्कृत वांग्मय के विशाल द्वार को खोला जा सकता है |

क्रेडिट: 6	पूर्णांक: 100	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 90

वर्गः	**पाठ्यवस्तु**	**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्गः	अजन्त-हलन्त-(पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग) शब्दानां शब्दरूपाभ्यास: । भ्वादि-अदादि-जुहोत्यादि-दिवादि-स्वादि-तुदादि-रुधादि-तनादि-क्रयादि-चुरादिगणस्य च धातुनां धातु रूपाभ्यास:।	15	1
द्वितीयो वर्गः	लघुसिद्धांतकौमदी-अच्-हल्-विसर्गसन्धिप्रकरणाभ्यास:। लघुसिद्धांतकौमदी-समासप्रकरणम्	15	1
तृतीयो वर्गः	क्त-क्तवतु-शतृ-शानच् तुमन्-तव्यत्-तृच्-क्त्वा-ल्यप्-ल्यूट्-अनीयर-घञ्-ण्वुल्-क्तिन्- यत्यादिप्रत्ययानामभ्यास: ।	15	1
चतुर्थो वर्गः	वैदिकवाङ्मयस्य संक्षिप्तेतिहास:- वेद- वेदाङ्ग-ब्राह्मण आरण्यक- उपनिषदादिषु कृतानि शोधकार्याणि- एकदृष्टि: ।	15	1
पञ्चमो वर्गः	आधुनिकसंस्कृतसाहित्यकारा: - पं० अंबिकादत्तव्यास:- डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, डॉ. हरिनारायण दीक्षित, प्रो. अभिराज राजेंद्रमिश्र, प्रो. हरिदत्त शर्मा, मथुरा प्रसाद दीक्षित:, डॉ.श्रीधरभास्करवर्णेकरादिनां परिचय: तेषां कृतिषु च शोधकार्याणि।	15	1
षष्ठमो वर्गः	आधुनिकसंस्कृतसाहित्यकारा: - पं० अंबिकादत्तव्यास:- डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, डॉ. हरिनारायण दीक्षित, प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो. हरिदत्त शर्मा, मथुरा प्रसाद दीक्षित:, डॉ.श्रीधरभास्करवर्णेकरादिनां परिचय: तेषां कृतिषु च शोधकार्याणि।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः-

१. लघुसिद्धांतकौमुदी (भैमीव्याख्यासहितम~) - भीमसेन शास्त्री
२. लघुसिद्धांतकौमुदी - श्री धरानंद शास्त्री
३. लघुसिद्धांतकौमुदी - लाल बहादुर कुशवाहा
४. लघुसिद्धांतकौमुदी (संधिप्रकरणम्)- प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र
५. व्यवहारप्रदीपः (प्रथमो भागः) - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम (केंद्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
६. व्यवहारप्रदीपः (द्वितीयो भागः) - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम (केंद्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली
७. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - डॉ. बाबूराम सक्सेना
८. बृहद अनुवाद चन्द्रिका- चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री
९. प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
१०. आधुनिक संस्कृत साहित्य - डॉ. हीरालाल शुक्ल।

Category – C

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): DSNC - 603	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** संस्कृतवाङ्मयास्य मूलभूतसिद्धान्त

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शोधार्थियों को संस्कृत वांग्मय के सिद्धांतों- समालोचनात्मक, तुलयात्मक एवं अनुशीलनात्मक सिद्धांतों से अवगत कराना है |

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र पौराणिक ऐतिहासिक स्त्रोत एवं आधुनिक काव्य, महाकाव्य, कथा, तथा उपन्यास आदि का समीक्षात्मक समालोचनात्मक अनुशीलनात्मक एवं तुलनात्मक आदि अध्ययन की रूपरेखा समझ सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 55 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 90

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	वैदिकसाहित्यस्य मूलतत्व-सिद्धान्तश्च |	15	1
द्वितीयो वर्गः	काव्यशात्रीय-मूलसिद्धान्ताः |	15	1
तृतीयो वर्गः	काव्यशात्रीय- सिद्धांतानां समीक्षात्मकमध्ययनम् |	15	1
चतुर्थो वर्गः	वेद तथा साहित्ये शोधक्षेत्राणि |	15	1
पञ्चमो वर्गः	पालि - प्राकृतेश्च शोध-क्षेत्राणि |	15	1
षष्ठमो वर्गः	भारतीयदर्शने शोध-क्षेत्राणि |	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. भारतीयग्रन्थसम्पादनशास्त्रप्रवेशिनी – राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् , तिरुपति |
२. पाण्डुलिपि सम्पादन कला - रामगोपाल शर्मा , प्रभात प्रकाशन , नई दिल्ली
३. पाण्डुलिपि विज्ञान - सत्येंद्र, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
४. शोध प्राविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान – अभिराज राजेंद्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज
५. साहित्यानुसन्धानावबोधप्रविधिः - प्रो. रहसविहारी द्विवेदी
६. लेखन कला का इतिहास (२ खण्ड) - ईश्वरचंद्र राही, लखनऊ
७. भारतीय लिपियों की कहानी - गुणाकर मूले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
८. शोध तंत्र एवं सिद्धांत - डॉ. शैल कुमार
९. शोध प्रविधि - डॉ. शर्मा, सरनाम सिंह
१०. Research Methodology Methods and Techniques - C. R. Kothari
११. Conducting Research Literature Reviews: From the internet to paper. Sage Publications

M.A. SANSKRIT

षण्मासससत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रमः

SEMESTER SYSTEM (CBCS PROGRAMME)

M.A. TWO YEARS
(Four Semester – Choice Based Credit System Programme)

Course Structure

Course Code	Semester-I Core Course (Compulsory)	Course Nature	Total Marks 100		Total Credits	Remarks
			Written	Internal		
MSNC-401	वेदसंहिता-संवादसूक्तञ्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-402	व्याकरण-भाषाविज्ञानञ्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-403	काव्यं काव्यशास्त्रञ्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-404	तर्कभाषा-अद्वैतवेदान्तश्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNM-405	संस्कृतवाग्भूषणम्	संस्कृत लघुपाठ्यक्रमः	75	25	4	-
MSNP-406	शोध-परियोजना	-	-	-	4	-
Total Credits of Semester-I					**28**	-

Course Structure

Course Code	Semester-II Core Course (Compulsory)	Course Nature	Total Marks 100		Total Credits	Remarks
			Written	Internal		
MSNC-411	वेदोपनिषद्	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-412	व्याकरणं पालि-प्राकृत-अपभ्रंशश्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-413	काव्यशास्त्रालङ्कार: एवं चम्पूकाव्यम्	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-414	सांख्यवेदान्तदर्शनञ्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNP-415	शोध-परियोजना	-	-	-	4	-
Total Credits of Semester-II					**24**	-

Course Structure

Course Code	Semester-III Core Course (Compulsory)	Course Nature	Total Marks 100		Total Credits	Remarks
			Written	Internal		
MSNC-501	महाभाष्यम् एवञ्च स्वशास्त्रीय-निबंध:	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-502	भारतीयसंस्कृति: पर्यावरणञ्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNE-503A	संहिता-ब्राह्मणयज्ञश्च	*Optional Paper*	75	25	5	Any one Paper can be pursued by the students.
MSNE-503B	मध्यसिद्धान्तकौमुदी महाभाष्यञ्च	*Optional Paper*				
MSNE-503C	काव्य एवं नाट्यशास्त्रम्	*Optional Paper*				
MSNE-503D	न्याय-एवं वैशेषिकसिद्धांतः	*Optional Paper*				
MSNE-504A	वेदाङ्गानि	*Optional Paper*	75	25	5	Any one Paper can be pursued by the students.
MSNE-504B	वाक्यपदीयम्	*Optional Paper*				
MSNE-504C	खण्डकाव्यं-महाकाव्यञ्च	*Optional Paper*				
MSNE-504D	बौद्ध- मीमांसादर्शनश्च	*Optional Paper*				
MSNP-405	शोध-परियोजना	-	-	-	4	-
Total Credits of Semester-III					**24**	-

Course Structure

Course Code	Semester-IV Core Course (Compulsory)	Course Nature	Total Marks 100		Total Credits	Remarks
			Written	Internal		
MSNC-511	व्याकरणमनुवादश्च	Core Discipline	75	25	5	-
MSNC-512	आधुनिक-संस्कृत-साहित्यम्	Core Discipline	75	25	5	-
MSNE-513A	वेदसंहिता एवं ब्राह्मणमीमांसा	*Optional Paper*	75	25	5	Any one Paper can be pursued by the students.
MSNE-513B	संस्कृत-व्याकरणदर्शनम्	*Optional Paper*				
MSNE-513C	छन्दोग्रंथश्च	*Optional Paper*				
MSNE-513D	न्यायसूत्र-योगदर्शनञ्च	*Optional Paper*				
MSNE-514A	वेदाङ्गानुक्रमणी	*Optional Paper*	75	25	5	Any one Paper can be pursued by the students.
MSNE-514B	व्याकरणमीमांसा	*Optional Paper*				
MSNE-514C	काव्यमीमांसा गद्यकाव्यञ्च	*Optional Paper*				
MSNE-514D	माण्डूक्यकारिका-शाङ्करवेदान्तश्च	*Optional Paper*				
MSNP-515	शोध-परियोजना	-	-	-	4	-
Total Credits of Semester-IV					**24**	-

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु,
षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)
पाठ्यक्रमपरिचय:

परास्नातक संस्कृत का यह पाठ्यक्रम चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम CBCS प्रोग्राम है |
यह पाठ्यक्रम 2 वर्षीय और 4 सेमेस्टर का होगा, जिसमे कुल १०० क्रेडिट होंगे।

छात्र को **प्रथम सेमेस्टर** में 4 अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट(प्रत्येक ५ क्रेडिट) एवं अन्य संकाय का एक लघु पाठ्यक्रम ४ क्रेडिट का पढ़ना होगा तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जिसके ४ क्रेडिट होंगे इस प्रकार प्रथम सेमेस्टर कुल २८ क्रेडिट का होगा |

द्वितीय सेमेस्टर में ४ अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** ४ क्रेडिट की करनी होगी इस प्रकार द्वितीय सेमेस्टर कुल २४ क्रेडिट का होगा |

तृतीय एवं चतुर्थ के प्रत्येक सेमेस्टर में -
२ अनिवार्य पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) और २ ऐच्छिक पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जो ४ क्रेडिट की होगी | प्रत्येक सेमेस्टर ऐच्छिक पाठ्यक्रम A (वेद), B (व्याकरण), C (साहित्य) और D (दर्शन) वर्ग में विभक्त होगा | यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम केकिसी एक वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे उसी वर्ग का ही चयन करना होगा, जिसके आधार पर उपाधि की विशेषज्ञता प्रदान की जाएगी

उदाहरणार्थ - यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम के A वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे A वर्ग का ही चयन करना होगा |
इस प्रकार तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर २४+२४= कुल ४८ क्रेडिट के होंगे |

नोट: प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के प्रत्येक प्रश्नपत्र ७५ अंक लिखित और २५ अंक आंतरिक मूल्यांकन =१०० अंक के होंगे |

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु,

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

Course Introduction

The course of Masters Sanskrit is semester system credit based CBCS program. This course will be of 2 years and 4 semesters with a total of 100 credits.

The student will have to study 4 compulsory courses of 20 credits (5 credits each) in the first semester and a Minor course of 4 credits in other disciplines and undertake a research project of 4 credits, thus the first semester will be 28 credits in total.

The second semester will consist of 4 compulsory courses of 20 credits (5 credits each) and a research project of 4 credits, thus the second semester will be of 24 credits.

In each of the third and fourth semesters -

2 compulsory courses of 10 credits (5 credits each) and 2 elective courses of 10 credits (5 credits each) and a research project of 4 credits each. Each semester elective courses will be divided into classes A (Veda), B (Vyakarana), C (Sahitya) and D(Darshana).

If a student chooses any one section of the first elective course, then in the second elective course also he will have to choose the same class.

For example - If a student chooses A class of first elective course then he will have to choose A class in second elective course also.

Thus third and fourth semester will be 24+24= total 48 credits.

Note: Each paper of 1st, 2nd, 3rd and 4th semester will be of 75 marks written and 25 marks internal assessment = 100 marks.

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु
षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)
प्रथमषण्मासिकसत्रम् (First Semester)

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :**
MSNC - 401	वेदसंहिता-संवादसूक्तञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य एवं संहिता का व्यापक परिचय देना है। इस पाठ्यक्रम में ऋग्वेद एवं ऋग्वेद भाष्य भूमिका के कुछ महत्वपूर्ण स्तोत्र तथा महत्वपूर्ण संवाद सूक्त शामिल हैं, जिसके माध्यम से छात्र प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को समझ सकेंगे|

अधिगम: (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद छात्र-

- को कुछ वैदिक देवताओं की प्रकृति क्रिया और प्रतिनिधित्व के बारे में पता चल जाएगा|
- वैदिक भजनों के अर्थ की व्याख्या करने में सक्षम होंगे, प्राचीन और आधुनिक टीकाकारों की कुछ प्रसिद्ध टिप्पणियों के अनुसार वैदिक मंत्रों को उनके वास्तविक रूप में पढ़ने का प्रयास करेंगे|

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	**पाठ्यवस्तु**	**व्याख्यानसंख्या**	**क्रेडिट - संख्या**
प्रथमो वर्ग:	ऋग्वेद:- वरुणसूक्तम् (१.२५), सवितृसूक्तम् (१.३५), सूर्यसूक्तम् (१.१५१)	15	1
द्वितीयो वर्ग:	ऋग्वेद: - उसस्-सूक्तम् (३.६१) पर्जन्यसूक्तम् (५.८३) वाक्सूक्तम् (१०.१२५)	15	1
तृतीयो वर्ग:	सरमा-पणि संवादसूक्तम् (१०.१०८), विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्तम् (३.३३), यम-यमी-संवादसूक्तम् (१०.१०)	15	1
चतुर्थो वर्ग:	पुरुरवा-उर्वशी संवादसूक्तम्	15	1
पञ्चमो वर्ग:	ऋग्वेदभाष्यभूमिका - वेदापौरूषेयतवसिद्धि: पर्यन्तम्	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः [MSNC - 401]

१. ऋक्सुक्तसङ्ग्रहः –	डॉ. हरिदत्त शास्त्री
२. वैदिक सूक्त संग्रह -	गीता प्रेस गोरखपुर
३. वेदचयनम्-	विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी
४. ऋग्वेद संहिता -	पं. दामोदरपतद सातवलेकर
५. वेदामृतमञ्जूषिका -	डॉ. प्रयागनरायण मिश्र
६. वैदिक व्याकरण –	डॉ. रामगोपाल
७. वैदिक साहित्य और संस्कृति –	प्रो. बलदेव उपाध्याय
८. वैदिक साहित्य और संस्कृति –	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
९. वैदिक साहित्य का इतिहास -	डॉ. रघुवीर वेदान्तकर
१०. वैदिक साहित्य और संस्कृति का वृहद् इतिहास –	प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 402	व्याकरणभाषाविज्ञानञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

यह पाठ्यक्रम छात्रों को दर्शन एवं आधुनिक भाषाविज्ञान की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणा एवं सिद्धान्तों का साक्षात्कार कराता है, और उनके प्रकाश में संस्कृत भाषा को देखने और उसका विश्लेषण करने में उनकी मदद करता है | पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को संस्कृत ध्वन्यात्मकता, आकृति विज्ञान, वाक्य रचना और शब्दार्थ से परिचित कराएगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को अष्टाध्यायी यानी महाभाष्य की कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणाओं के बारे में बताता है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र-

- आधुनिक भाषा विज्ञान के आगमन के साथ हुई संस्कृत भाषा का अवलोकन और विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की मूल अवधारणा और भाषा परिवर्तन के नियम और संस्कृत में उनके अनुप्रयोग को समझ सकेंगे।
- भाषा और भाषा विज्ञान के दर्शन के प्राचीन भारतीय विचारकों के योगदान का अवलोकन और सराहना करने में सक्षम होंगे।
- व्याकरण के इतिहास के महत्वपूर्ण प्रासंगिक और उनके उद्देश्य को समझने में सक्षम होंगे।
- शब्द की प्रकृति, अर्थ और उनके संबंध और व्याकरणविदों के स्फोट सिद्धांत को समझने में सक्षम होंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यानसंख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	तिङन्तप्रकरणे 'भू' धातोः रूपाणां सिद्धिः	15	1
द्वितीयो वर्गः	तिङन्तप्रकरणे 'एध्' धातोः रूपाणां सिद्धिः	15	1
तृतीयो वर्गः	पूर्वोत्तरकृदन्तप्रकरणान्तर्गतागतानां शब्दानां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सिद्धिः।	15	1
चतुर्थो वर्गः	भाषाशस्त्रम्, संगठनात्मकभाषाशास्त्रम्, भाषायाः घटकानि। भारोपीयभाषापरिवार	15	1
पञ्चमो वर्गः	ध्वनिनियमाः- ग्रिम-ग्रासमान- बर्नरश्च, अर्थपरिवर्तनस्य दिशः, कारणानि स्फोट्सिद्धान्तश्च।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी -	धरानन्द शास्त्री
२. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) -	भीमसेन शास्त्री
३. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी -	डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री
४. भाषा विज्ञान-	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
५. भाषा विज्ञान-	डॉ. कर्ण सिंह
६. भाषा विज्ञान-	रामअवध पाण्डेय, रविनाथ मिश्र
७. भाषा विज्ञान-	डॉ. भोलानाथ तिवारी
८. संस्कृत भाषा शास्त्रीय अध्ययन -	डॉ. भोला शंकर व्यास

●पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC - 403	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : काव्यं काव्यशास्त्रञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य काव्य प्रकाश के पाठ के माध्यम से भारतीयों के आलोचनात्मक विश्लेषण के विभिन्न आयामों का परिचय देना है, तथा साथ ही साथ नैषध काव्य की माधुर्यता का रसास्वादन कराते हुए मानव मूल्यों से परिचित कराना है।

अधिगम (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद छात्र-

- समृद्ध संस्कृत साहित्यिक परंपरा के बारे में जानेंगे।
- निर्धारित साहित्यिक रचना में व्यक्त सौंदर्यवादी राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना करने में सक्षम होंगे, और रस के विचारोत्तेजक अर्थ के महत्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- कविता में कविता की अभिव्यक्तियों की सराहना और आनंद लेने में सक्षम होंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	काव्यप्रकाशप्रथमोल्लासपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	काव्यप्रकाशद्वितियोल्लासः – आदितो एकादशसूत्रपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्ग:	द्वितियोल्लास: - लक्ष्मणानिरूपणात् अंत पर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	नैषधीयचरितम् प्रथमो सर्ग: प्रथम पद्यात् पञ्चषष्टि: पद्यपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	कादम्बरीकथामुखम् - आदितो विन्ध्याटवीवर्णनपर्यन्तम्	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. मम्मटाचार्यविरचित: -काव्यप्रकाश: –	आचार्य विश्वेश्वर
२. मम्मटाचार्यविरचित: -काव्यप्रकाश: –	डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी
३. मम्मटाचार्यविरचित: -काव्यप्रकाश: –	श्रीनिवास शास्त्री
४. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: –	श्रीनिवास शर्मा
५. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग:) –	आचार्य धुरंधर पाण्डेय
६. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग:) –	शुभा भारद्वाज
७. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग:) –	डॉ0 श्यामलेह कुमार तिवारी
८. नैषधीयचरितम् -	डॉ. देवनारायण पाठक

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC - 404	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : तर्कभाषा-अद्वैतवेदान्तश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को तर्क भाषा के न्यायसूत्रों के पठन - पाठन के माध्यम से न्याय दर्शन के कुछ मौलिक सिद्धांतों, अवधारणाओं और सिद्धांतों से परिचित कराना है, तथा अद्वैत वेदांत पर लिखी गयी अपरोक्षानुभूति नामक ग्रन्थ में वर्णित जीवन दर्शन को आत्मसात कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम में अध्ययन के बाद छात्र-

- न्याय दर्शन की मौलिक अवधारणाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण और परीक्षण करने में सक्षम होंगे।
- निर्धारित पाठ और उसमें निहित अवधारणात्मक शब्दों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे।
- निर्धारित सिद्धांतों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे, अभूतपूर्व दुनिया के विश्लेषण और इसके विकास की प्रक्रिया में न्याय दार्शनिकों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जान पाएंगे।
- ज्ञानमीमांसा के अध्ययन में दार्शनिकों के योगदान को समझेंगे जिसका अनुप्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। दैनिक जीवन में न्याय दर्शन एवं जीवन दर्शन के ये सिद्धांत सत्य के उचित निर्णय में उनकी सहायता करेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	तर्कभाषा - आदितोऽप्रत्यक्षप्रमाणपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	तर्कभाषा - अनुमानप्रमाणात् उपमान प्रमाणं यावत्।	15	1
तृतीयो वर्गः	तर्कभाषा - शब्दप्रमाणात् प्रमाण्यवादं यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	अपरोक्षानुभूतिः - प्रथमकारिकातः पञ्चाशतकारिकापर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अपरोक्षानुभूतिः - एकपंचाशत्कारिकात् शतं यावत्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः-

१. केशवमिश्रप्रणीता तर्कभाषा-	श्रीनिवास शास्त्री
२. केशवमिश्रप्रणीता तर्कभाषा-	गजानन शास्त्री मूसलगांवकर
३. न्याय दर्शन--	आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
४. भारतीय दर्शन-	डॉ0 शशिकांत राय
५. अपरोक्षानुभूति-	आचार्य शांकर
६. दर्शन भारतीय दर्शन का इतिहास- (पाँच भाग) –	एस्. एन्. दास गुप्ता
७. भारतीय -	उमेश मिश्र
८. भारतीय दर्शन –	डॉ0 राधाकृष्णन
९. भारतीय दर्शन –	चटर्जी एवं दत्त
१०. Outline of Indian Philosophy –	Hiriyanna

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNM – 405 (Minor)	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : संस्कृतवाग्भूषणम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य सामान्य संस्कृत व्याकरण, भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं प्रमुख काव्यशास्त्रीय आचार्यो, उनकी कृतियों का सामान्य परिचय एवं छन्द तथा अलंकारों का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र संस्कृत वांग्मय के इतिहास से सामान्यत: परिचित हो सकेंगे। संस्कृत व्याकरण, दर्शन, काव्य, छंद एवं अलंकारों का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75	
वर्ग:	**पाठ्यवस्तु**		**व्याख्यानसंख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्ग:	संस्कृतसाहित्यस्य संक्षिप्त-इतिहास:- वेद्-वेदाङ्गानि, रामायण-महाभारत-हितोपदेश-अभिज्ञानशाकुन्तल-उत्तररामचरितञ्च।		15	1
द्वितीयो वर्ग:	संस्कृतव्याकरणशास्त्रस्य सामान्यपरिचय:- वर्णपरिचय:, उच्चारणस्थानानि, प्रयत्नोपसर्ग:, अव्ययं, संख्यावाचीशब्दाश्च। कारक- विभक्त-शब्दधातुरूपाणाञ्च सामान्य परिचय:।		15	1
तृतीयो वर्ग:	भारतीयदर्शनस्य संक्षिप्तेतिहास:- आस्तिक- नास्तिकदर्शनयो: विवेचनम्। श्रीमद्भगवद्गीता- आत्मन: स्वरूपम्।		15	1
चतुर्थो वर्ग:	संस्कृतकाव्यस्य प्रमुखाचार्या: तेषां कृतीनां सामान्यपरिचय। छन्द-अलङ्कारयो: सामान्यज्ञानम्, एवञ्च महाकाव्यनाटकयो: लक्षणज्ञानम्।		15	1

संस्तुत- ग्रन्था:-

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास-	आचार्य बलदेव उपाध्याय
२. संस्कृत साहित्य का इतिहास-	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
३. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-	बाबूराम सक्सेना
४. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-	बाबूलाल बलवंत
५. लघुसिद्धांतकौमुदी-	प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र
६. भारतीय दर्शन की रूपरेखा-	आचार्य बलदेव उपाध्याय
७. भारतीय दर्शन-	डॉ. शशिकांत राय
८. छन्दोऽलंकारसौरभम्-	प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
९. उत्तररामचरितम् -	डॉ. रमाकान्त मिश्र
१०. उत्तररामचरितम् -	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
११. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
१२. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -	डॉ पी. वी. पराशर

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 406	4

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु
षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

द्वितीयषण्मासिकसत्रम् (Second Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	पाठ्यक्रम शीर्षक (Course Name) :
MSNC - 411	वेदोपनिषद्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य के प्रमुख वैदिक देवताओ, अथर्ववेद में राजा के चुनाव, महत्व और उपनिषदों में वर्णित प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं वैदिक व्याकरण का व्यापक परिचय देना है, क्योंकि वैदिक व्याकरण का अध्ययन, व्युत्पत्ति, विज्ञान और वैदिक भाषा की विशिष्टता को समझने में मदद करता है।

अधिगम: (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र –

- वैदिक मंत्रों के माध्यम से प्राकृतिक देवताओं के महत्त्व समझ सकेंगे।
- प्राचीन वैदिक स्वर के मूल सिद्धांतों को जान सकेंगे।
- वैदिक स्वर और वैदिक व्याकरण के ज्ञान से वैदिक मंत्रों को उनके सत्य रूप में पाठ करने का प्रयास करेंगे।
- तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षावल्ली में वर्णित शिक्षा, अभ्युदय संहिताविषयक उपासना विधि और पाँच महासंहिताओं- लोकविषयक संहिता, ज्योतिविषयक संहिता, संतानविषयक संहिता, विद्याविषयक संहिता और अध्यात्मविषयक संहिता का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	ऋग्वेदः- इन्द्रसूक्तम् (१-१३२), अग्निसूक्तम्(१.११४), रुद्रसूक्तञ्च (२.३३)	15	1
द्वितीयो वर्ग:	ऋग्वेदः- अग्निसूक्तम् (४.७), कितवसूक्तम् (१०.३४), नासदीयसूक्तञ्च (१०.१२९)	15	1
तृतीयो वर्ग:	अथर्ववेदः- राज्ञः निर्वाचनम् (३.४), वरुणसूक्तम् (४.१६), कालसूक्तञ्च (१९.५३)	15	1
चतुर्थो वर्ग:	तैत्तिरियोपनिषद् शिक्षावल्लीमात्रम्।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	वैदिकव्याकरणम्- वैदिकशब्दरूपाणांवैशिष्ट्यम्, तुमर्थकप्रत्ययाः, लेट्- लुङ्लकारश्च।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. ऋक्सुक्तसङ्ग्रहः –	डॉ. हरिदत्त शास्त्री
२. ऋग्वेद संहिता -	पं. दामोदरपतद सातवलेकर
३. वेदामृतमञ्जूषिका -	डॉ. प्रयागनरायण मिश्र
४. वैदिक व्याकरण –	डॉ. रामगोपाल
५. वैदिक साहित्य और संस्कृति –	प्रो. बलदेव उपाध्याय
६. वैदिक साहित्य और संस्कृति का वृहद् इतिहास –	प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC - 412	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : व्याकरणं पालि-प्राकृत-अपभ्रंशश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित ण्यन्त-यङन्त-यङ्लुगन्त प्रक्रियाओं, तद्धित प्रकरण के अंतर्गत आने वाले साधारण- अपत्यार्थ-रक्ताद्यार्थक और चातुर्थिक प्रत्ययों का सम्यक् अवरोधन कराना। पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश संग्रह के गद्य-पद्यों के माध्यम से बौद्धकालीन भारत की संस्कृति-सभ्यता और भाषात्मक विशेषताओं का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- व्याकरण के महत्वपूर्ण प्रत्ययों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर उनका प्रयोग और संस्कृत भाषा की विशिष्टता को समझ सकेंगे।
- पालि-प्राकृत और अपभ्रंश के गद्यात्मक एवं पद्यात्मक कथाओं के माध्यम से प्राचीन भारतीय सामाजिक, राजनीतिक और चारित्रिक वैशिष्ट्य एवं महत्वपूर्ण बौद्धकालीन अभिलेखों की लिपियों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी- ण्यन्त - यङन्त – यङ्लुगन्तप्रक्रियाश्च। नामधातुः- पुत्रीयति, कृष्णति, शब्दायते।	15	1
द्वितीयो वर्गः	तद्धितप्रकरणम् - अपत्याधिकारः, रक्ताद्यर्थकाः, चातुरर्थिकाश्च।	15	1
तृतीयो वर्गः	पालिपाकृत-अपभ्रंशसंग्रहः- धम्मपदसंगहो एवञ्च पटिच्चसमुप्पादो।	15	1
चतुर्थो वर्गः	महापरिनिब्बानसुक्तम्। प्राकृत – कर्पूरमञ्जरी, अशोकाभिलेखः एवञ्च गिरनाराभिलेखः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अपभ्रंश- अपभ्रंशमुक्तसंग्रहः, वसुदत्तकथा एवञ्च दोहाकोशः।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. लघुसिद्धांतकौमुदी (भैमीव्याख्यासहितम~) -	भीमसेन शास्त्री
२. लघुसिद्धांतकौमुदी -	श्री धरानंद शास्त्री
३. लघुसिद्धांतकौमुदी -	लाल बहादुर कुशवाहा
४. भाषा विज्ञान -	भोलानाथ तिवारी
५. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र -	कपिल देव द्विवेदी
६. भाषा विज्ञान -	भोला शंकर व्यास एवं कर्ण सिंह
७. संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन -	भोला शंकर व्यास
८. पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश संग्रह -	डॉ0 राम अवध पाण्डे
९. पालिमहाव्याकरण -	जे. कश्यप
१०. प्राकृत् भाषाओं का व्याकरण -	एच~. सी. जोशी
११. Introduction to Comparative Philology –	Gune
१२. Phonetics in Ancient India –	W. S. Allen

● **पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):** MSNC - 413	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** काव्यशास्त्रालङ्कार: एवं चम्पूकाव्यम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य के शोभाधायक तत्व अलंकारों से परिचित कराना तथा की गद्य-पद्यमयी रचना चम्पू काव्य का रसास्वादन कराना है |

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र काव्य प्रकाश में उल्लिखित अलंकारों का अपनी रचना में प्रयोग कर सकेंगे तथा चम्पू काव्य के वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाशः- नवमोल्लासान्तर्गतानाम् अलङ्काराणां लक्षणोदारणानि च।	15	1
द्वितीयो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... उपमा-अनन्वय-उत्प्रेक्षा-रूपक-समासोक्ति-निदर्शना-अतिशयोक्तिश्च।	15	1
तृतीयो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... दृष्टान्त-दीपक-तुल्योगिता-व्यतिरेक-विशेषोक्ति-विभावना-अर्थान्तरन्यासः काव्यलिंङ्गश्च।	15	1
चतुर्थो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... उदात्त-समुच्चय-अनुमान-परिकर-व्याजोक्ति-परिसंख्या तथा च असंगतिः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	त्रिविक्रमभट्टकृतं नलचम्पूकाव्यम्- मङ्गलाचरणात् आर्यावर्तवर्णनपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश -	आचार्य विश्वेश्वर
२. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश –	डॉ पारसनाथ द्विवेदी
३. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश –	श्रीनिवास शास्त्री
४. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश –	श्रीनिवास शर्मा
५. नलचम्पू –	श्री धरानन्द शास्त्री
६. नलचम्पू –	तारिणीश झा

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC - 414	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) सांख्यवेदान्तदर्शनञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य सांख्यकारिका और वेदान्तसार के पठन के माध्यम से छात्रों को कुछ मौलिक सिद्धांतों की अवधारणा और कुछ सांख्य एवं वेदान्तदर्शन के सिद्धांतों से परिचित कराना है। यह छात्र को भारतीय दार्शनिक प्रणाली के विभिन्न सिद्धांतों के विश्लेषण की बुनियादी बौद्धिक समझ हासिल करने में भी मदद करेगा।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्र-

- सांख्य और वेदांत दर्शन की मौलिक अवधारणा का समालोचनात्मक विश्लेषण और परीक्षण करने में सक्षम होंगे।
- निर्धारित पाठ और उसमें निहित अवधारणात्मक शब्दों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे।
- अभूतपूर्व दुनिया और विकास की प्रक्रिया के विश्लेषण में सांख्य और वेदांत दार्शनिकों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जानने के लिए निर्धारित सिद्धांतों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- तार्किक अध्ययन में सांख्य और वेदांत दार्शनिकों के योगदान को समझ सकेंगे, जो आज के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।
- सत्य के उचित निर्णय में उनकी मदद करने वाली जीवन स्थितियां समझ सकेंगे।

क्रेडिट: **5**	पूर्णांक: **75 + 25**	उत्तीर्णांक: **33** प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - **75**

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	सांख्यकारिका- प्रथमकारिकात् - विंशति: कारिकां यावत्।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	सांख्यकारिका- एकविंशति: कारिकात् - पञ्चचत्वारिंशत्कारिकां यावत्।	15	1
तृतीयो वर्ग:	सांख्यकारिका- षड्चत्वारिंशत्कारिकात् - अन्तिमां कारिकां यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	वेदान्तसार: - मङ्गलाचरणात् पञ्चीकरणप्रकियां यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	वेदान्तसार: - भौतिकसृष्टिप्रक्रियात: विदेहमुक्तिनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. सांख्य तत्व कौमुदी – व्याख्याकार: डॉ. संतनरायणलाल श्रीवास्तव्य
२. सांख्य तत्व कौमुदी – व्याख्याकार: गजानन शास्त्री मुसलगांवकर
३. सांख्य तत्व कौमुदी – व्याख्याकार: आद्याप्रसाद मिश्र
४. दर्शन भारतीय दर्शन का इतिहास (पाँच भाग) – एस्. एन्. दास गुप्ता
५. भारतीय - उमेश मिश्र
६. भारतीय दर्शन – डॉ. राधाकृष्णन
७. भारतीय दर्शन – चटर्जी एवं दत्त
८. Outline of Indian Philosophy – Hiriyanna

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 415	4

राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु ·
षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रमः
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

तृतीयषण्मासिकसत्रम् (Third Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	**पाठ्यक्रम शीर्षक (Course Name) :**
MSNC - 501	महाभाष्यम् एवञ्च स्वशास्त्रीय-निबंधः

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप के विस्तार से परिचित कराते हुए उनमें अपने शास्त्र से संबद्ध गंभीर विषयों पर निबंध लेखन की प्रवृत्ति को विकसित करना, तथा शास्त्रीय निबंध लेखन के सोपान की जानकारी प्रदान करना।

अधिगमः (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप से परिचित होकर व्याकरण दर्शन के प्रयोजन को समझ सकेंगे।
- में स्वशास्त्र से संबद्ध शास्त्रीय विषयों पर निबंध लेखन की प्रवृत्ति विकसित होगी।

क्रेडिटः 5	पूर्णांकः 75 + 25	उत्तीर्णांकः 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	महाभाष्यम् - प्रथमाह्निक - प्रारम्भतः व्याकरणाध्ययनस्य प्रयोजनपर्यन्तम	15	1
द्वितीयो वर्गः	प्रयोजनानंतरात् 'आचारे नियमः' इति वार्तिकपर्यन्तम्	15	1
तृतीयो वर्गः	'प्रयोगे सर्वलोकस्य' वार्तिकात् अन्तपर्यन्तम्	15	1
चतुर्थो वर्गः	उपर्युक्त-वर्गत्रयात् समीक्षात्मकप्रश्नानि	15	1
पञ्चमो वर्गः	स्व-शास्त्रीयनिबन्धाः	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. व्याकरण महाभाष्यम् -	जय शंकर लाल त्रिपाठी
२. व्याकरण महाभाष्यम् -	प्रथमं पस्पशाह्निकम् - वेद प्रकाश विद्यावाचस्पति
३. संस्कृतनिबंधसंग्रहः-	डॉ पूर्णिमा आचार्य
४. संस्कृतनिबन्धशतकम्-	डॉ कपिल देव द्विवेदी
५. संस्कृतनिबन्धनिचयः-	डॉ राजेंद्र मिश्र
६. संस्कृतनिबन्धरत्नाकरः -	डॉ. शिव प्रसाद भरद्वाज

● **पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):** MSNC - 502	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** भारतीयसंस्कृति: पर्यावरणञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हुए संस्कृति की विशेषता, विकास, संस्कृति और सभ्यता में अंतर तथा अन्य संस्कृतियों पर भारतीय संस्कृत के प्रभाव का ज्ञान प्रदान करना।

वैश्विक महासंघ कट पर्यावरण से परिचित कराते हुए पर्यावरण के घटक संरक्षण और उपाय तथा 'संस्कृत साहित्य में पर्यावरणीय चेतना' के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- भारतीय संस्कृति से परिचित होकर उसके अन्य देशों की संस्कृतियों पर प्रभाव और महत्व को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं पर्यावरण की प्रासंगिकता और उपादेयता की जानकारी प्राप्त करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्व को समझ सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	भारतीयसंस्कृतिः- अर्थ- परिभाषा-विशेषताः- मूलतत्वं, भारतीयसंस्कृतेः विकासः, संस्कृति-सभ्यतायाः भेदश्च, भारतीयसंस्कृतेः अन्यसंस्कृतिषु प्रभावः।	15	1
द्वितीयो वर्गः	संस्कृतसाहित्ये समाजः, जीवनमूल्यानि, एवञ्च वर्णाश्रमव्यवस्था।	15	1
तृतीयो वर्गः	पुरुषार्थः संस्कारश्च।	15	1
चतुर्थो वर्गः	प्राचीनभारतीयशिक्षा-व्यवस्था।	15	1
पञ्चमो वर्गः	पर्यावरणशब्दस्य व्युत्पत्तिः, अर्थ-परिभाषा- महात्म्यञ्च। पर्यावरणस्य तत्वानि, पर्यावरणस्य हानिकारकानि घटकानि, संरक्षणोपायाः, पर्यावरणं दूरीकर्तुं मार्गाः तथा च संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणीयचेतना।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. वैदिक व्याकरण - डॉ. रामगोपाल
२. वैदिक साहित्य और संस्कृति - पं. बलदेव उपाध्याय
३. वैदिक साहित्य और संस्कृति का बृहद इतिहास - ओम प्रकाश पाण्डेय
४. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – डॉ. कपिल देव द्विवेदी
५. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - डॉ रघुवीर वेदांतकर

● **पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):** MSNE – 503 A	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name)** संहिताब्राह्मणयज्ञश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक संहिताओं (ऋक्-यजुः-अथर्व), और ब्राह्मण ग्रन्थों का ज्ञान प्रदान करना, तथा साथ ही साथ वैदिक यज्ञ से भी परिचित कराना है, जिससे वे अपनी प्राचीन यज्ञ परंपरा का संरक्षण कर सकें।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस वैकल्पिक प्रश्न पत्र को पढ़ने के पश्चात छात्र-

- वैदिक संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित प्राचीन भारतीय संस्कृति को जान सकेंगे तथा पर्यावरण को शुद्ध करने वाले वैदिक यज्ञों से परिचित हो सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ऋग्वेदसंहिता- विश्वेदेवासूक्तम् (१.८९) एवञ्च पूषन्सूक्तम् (६.५४)	15	1
द्वितीयो वर्गः	शुक्लयजुर्वेदः- माध्यन्दिनसंहिता- प्रथमोऽध्यायः- प्रथमकण्डिकात् पञ्चदशं यावत्।	15	1
तृतीयो वर्गः	अथर्ववेद-संहिता - दीर्घायुः प्राप्तिसूक्तम् (२.४), कृषिसूक्तम् (३.१७), राज्ञः स्वराजि पुनर्स्थापना (३.३)।	15	1
चतुर्थो वर्गः	ऐतरेयब्राह्मण- प्रथमपञ्चिका प्रथमोऽध्यायः सम्पूर्णम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वैदिकयज्ञाः, यज्ञानां भेदाः, यज्ञेषु प्रयुज्यमानान्युपकरणानि एवञ्च प्रमुखपारिभाषकशब्दाः।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. ऋग्वेदसंहिता -	पंडित राम गोविंद त्रिवेदी
२. ऋग्वेद -	डॉ गंगा सहाय शर्मा
३. ऋग्वेद संहिता यथार्थ अनुवाद -	महेश चंद्र माहेश्वरी प्रसन्न चंद गौतम
४. अथर्ववेदसंहिता -	पंडित रामस्वरूप शर्मा गौड़
५. शतपथ ब्राह्मण –	डॉ. सुंदर नारायण झा
६. यजुर्वेद संहिता-	मूलमात्र चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान
७. यजुर्वेद संहिता -	पंडित ईश्वर चंद्र
८. यजुर्वेद संहिता -	महर्षि दयानंद सरस्वती
९. ऋग्वेद संहिता हिंदी भावार्थ सहित-	पंडित श्री राम शर्मा अचार्य
१०. वैदिक वांग्मय का इतिहास –	पंडित भगवत दत्त
११. ऐतरेयब्राह्मण -	प्रो. उमेश प्रसाद मिश्र
१२. ऐतरेयब्राह्मण -	डॉ. सुधाकर मालवीय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 503 B	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** व्याकरणप्रक्रिया-महाभाष्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण प्रक्रिया के माध्यम से शब्दरूप सिद्धि का ज्ञान प्राप्त कराना। महाभाष्य, व्याकरण दर्शन की पृष्ठभूमि और व्याकरण शास्त्र के इतिहास की जानकारी प्रदान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- व्याकरण से संबंधित संज्ञा प्रकरण, अच्- हल्- एवं विसर्ग संधि के शब्द रूप की सिद्धि प्रक्रिया जान सकेंगे।
- महाभाष्य के द्वितीय आह्निक में वर्णित माहेश्वर सूत्रों पर लिखे गए भाष्य एवं व्याकरण शास्त्र के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - **75**

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मध्यसिद्धान्तकौमुदी- संज्ञाप्रकरणात् अच् सन्धिपर्यंतम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	मध्यसिद्धान्तकौमुदी- हल् सन्धिप्रकरणात् विसर्गसन्धिपर्यंतम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	महाभाष्यम्- द्वितीयाह्निकम् - आदितो ऐऔच् पर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	महाभाष्यम्- द्वितीयाह्निकम् - हयवरट् इत्यतः वर्गार्थवताधिकरणपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः	15	1

संस्तुत- ग्रन्थाः

१. मध्य सिद्धांत कौमुदी -	प्रो.आद्या प्रसाद मिश्र
२. मध्य सिद्धांत कौमुदी -	वरदराजाचार्य
३. मध्य सिद्धांत कौमुदी-	गुरु प्रसाद शास्त्री
४. मध्यसिद्धांतकौमुदी- भैमी व्याख्या-	भीमसेन शास्त्री
५. पतंजलि महाभाष्यम्-	जयदेव शास्त्री
६. संस्कृतव्याकरणम्-	डा. शिवबालकद्विवेदी
७. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास-।	आचार्य श्री युधिष्ठिर मीमांसक
८. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का वृहद इतिहास -	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 503 C	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** काव्य एवं नाट्यशास्त्रम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को काव्यशास्त्र, काव्यशास्त्र के मूलभूत सिद्धांत एवं काव्य की उत्कृष्ट परंपरा का अवबोधन कराना।
संस्कृत नाट्यविद्या का सामान्य परिचय कराते हुए नाट्यविधाओं का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र काव्य के व्यंग्यात्मक भेद, रस, रस के भेद, गुणदोषादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। नाट्यशास्त्र की विधाएं, नाट्य संधियों, नायक- नायिका भेदादि का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

क्रेडिट: **5**	पूर्णांक: **75 + 25**	उत्तीर्णांक: **33** प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - **75**	
वर्गः	**पाठ्यवस्तु**		**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्गः	काव्यप्रकाश चतुर्थोल्लास: सम्पूर्णम्।		15	1
द्वितीयो वर्गः	काव्यप्रकाश: - पञ्चमोल्लास:- गुणीभूतव्यंग्य, एवञ्च गुणीभूतव्यंग्यस्य भेदपर्यन्तम्।		15	1
तृतीयो वर्गः	काव्यप्रकाश: - सप्तमोल्लास:- आदितो अर्थदोषपर्यन्तम्। अष्टमोल्लास: - आदितो अन्तपर्यन्तम्।		15	1
चतुर्थो वर्गः	दशरूपकम् - प्रथमो प्रकाश: - ग्रन्थप्रयोजनम्, नाट्यस्वरूपम्, रूपकभेदा: भेदकतत्वानि च। अर्थप्रकृतय:, कार्यावस्था:, सन्धि- सन्धिभेदश्च, विष्कम्भक: जनान्तिकञ्च। दशरूपकम्- द्वितीयो प्रकाश: - नायक- नायिका, तयो: भेदा:, एवञ्च भारती आदि वृत्तय: पर्यन्तम्।		15	1
पञ्चमो वर्गः	दशरूपकम्- तृतीयो प्रकाश: - रूपकभेदा:, चतुर्थो प्रकाश:- आदितो- दशरूपकस्य सिद्धान्तपर्यन्तम्।		15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: -	आचार्य विश्वेश्वर
२. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: –	डॉ पारसनाथ द्विवेदी
३. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: –	श्रीनिवास शास्त्री
४. भारतमुनि विर्चितम् नाट्यशास्त्रम् -	प्रो. बृजमोहन चतुर्वेदी
५. भारतमुनि विर्चितम् नाट्यशास्त्रम् (१ - २ अध्याय) –	पं. श्री जगन्नाथ शास्त्री तैलंग
६. दशरूपकम् -	डॉ. रामशंकर त्रिपाठी
७. दशरूपकम् -	डॉ. भोला शंकर व्यास
८. दशरूपकम् -	डॉ. रामजी उपाध्याय
९. दशरूपकम् -	बैजनाथ पाण्डेय
१०. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक -	हजारी प्रसाद द्विवेदी , पृथ्वीनाथ द्विवेदी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC – 503 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : न्याय एवं वैशेषिकसिद्धान्त:

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को न्याय एवं वैशेषिक दर्शन परम्परा से परिचित कराते हुए न्याय दर्शन के सिद्धांतों के निरूपण एवं उनके उद्देश्यों की सार्थकता से अवगत कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र वस्तुतः अपनी बुद्धि को सुपरिष्कृत, तीव्र और विशद बना सकेंगे । न्यायशास्त्र उच्चकोटि के संस्कृत साहित्य (और विशेषकर भारतीय दर्शन) का प्रवेशद्वार है। उसके प्रारम्भिक परिज्ञान के बिना किसी ऊँचे संस्कृत साहित्य को समझ पाना कठिन है, चाहे वह व्याकरण, काव्य, अलंकार, आयुर्वेद, धर्मग्रन्थ हो या दर्शनग्रन्थ। दर्शन साहित्य में तो उसके बिना एक पग भी चलना असम्भव है।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः) द्रव्यनिरूपणम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	२. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः) गुणकर्मनिरूपणम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	३. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः) सामान्य-विशेष-समवायनिरूपणञ्चेति।	15	1
चतुर्थो वर्गः	४. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- शब्दखण्डः- शक्तिनिरूपणतः पदनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	५. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- शब्दखण्डः- लक्षणानिरूपणतः शाब्दबोधे हेतुनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. प्रशस्तपादभाष्यम्- पदार्थधर्मसंग्रहार्थम् - प्रशस्तपाद मुनिप्रणीत
२. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- (बालप्रिया)- श्री विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य
३. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- कारिकावली- डॉ. गायत्री शुक्ला
४. न्यायदर्शन - आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
५. वैशेषिक दर्शन - आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
६. प्रशस्तपादभाष्यम् - श्री दुर्गाधार झा
७. प्रशस्तपादभाष्यम् - श्रीधर भट्ट
८. न्यायदर्शन - डॉ. उदय कुमठेकर
९. न्यायदर्शन - स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
१०. भारतीय न्याय शास्त्र - स्वामी अनंत भारती एवं डॉ. ब्रम्हमित्र अवस्थी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 A	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : वेदाङ्गानि

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदाङ्गो के माध्यम से वैदिक शाखाओं के प्रारंभ, स्वरूप और प्रवृत्ति का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र वर्ण विवेचन, वर्ण उच्चारण के दोष, संहितागत वर्णसंधिया और क्रम पाठ आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगें। वेदाङ्गो में निहित ज्ञान राशि- शिक्षा, कल्प, सामान्य ज्योतिष आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ऋक्प्रातिशाख्यम्- प्रथमपटलं सम्पूर्णम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	ऋक्प्रातिशाख्यम्- द्वितीपटलं सम्पूर्णम्	15	1
तृतीयो वर्गः	पारस्करगृह्यसूत्रम् - प्रथमो काण्डः- १ कण्डिकात् १२ कण्डिकां यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	पाणिनीयशिक्षा - १ श्लोकात्- ४० श्लोकं यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अवकहड़ाचक्रम् (ज्योतिष) सम्पूर्णम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. महर्षि शौनकप्रनीतं ऋक्प्रतिशाखायम् - युगल किशोर व्यास, प्रभदत्त शर्मा
२. ऋक्प्रतिशाखायम् - डॉ. वीरेंद्र कुमार शर्मा
३. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. सुधाकर मालवीय
४. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. जगदीश मिश्र
५. पारस्करगृह्यसूत्रम् - पारस्कर चौखम्भा ओरिएंटलिए , दिल्ली
६. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. जमुना पाठक
७. पाणिनीयशिक्षा - शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन
८. शिक्षासूत्राणि - पं युधिष्ठिर मीमांसक

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) वाक्यपदीयम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वाक्यपदीय ग्रंथ के माध्यम से व्याकरण दर्शन की उत्कृष्टता से परिचित कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस ग्रंथ के अध्ययन के पश्चात छात्र व्याकरण दर्शन के महत्वपूर्ण अंगों को समझ सकेंगे तथा व्याकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	वाक्यपदीयम्- आदितो ४३ कारिकां यावत्। शब्दब्रह्मस्वरूपम्, शब्दब्रह्मण: शक्तय:, व्याकरणप्रयोजनं, शब्दनित्यता, व्याकरणनिर्माणप्रक्रियायाम् आगमप्रमाणश्च।	15	1
द्वितीयो वर्गः	वाक्यपदीयम्- ४४ कारिकात् ७४ कारिकां यावत्। शब्दभेदा:, शब्दवाक्ययोश्चैकत्वम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	वाक्यपदीयम्- ७५ कारिकात् १०६ कारिकां यावत्। स्फोट-ध्वनि:,पद-वाक्यं वर्णपदवाक्यग्रहणञ्च।	15	1
चतुर्थो वर्गः	वाक्यपदीयम्- १०७ कारिकात् १३२ कारिकां यावत्। शब्दभावोत्पत्ति:, शब्दब्रह्मण: सर्वव्यापकता, वाग्रूपताया: अनुगमश्च।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वाक्यपदीयम्- १३३ कारिकात् अन्तिमां कारिकां यावत्। व्याकरणप्रमाणानि 'साधु' शब्दस्य पुण्यजनकता, व्याकरणलक्ष्यानि, वेदमूलकतर्कशास्त्रस्यावश्यकता, जगत: नित्यत्वे प्रामाण्यानि च ।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. वाक्यपदीयम् - (ब्रह्मकाण्डम्)	पं. शिवशंकर अवस्थी
२. वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्)-	सूर्यनारायण शुक्ल, चौखंभा संस्कृत सीरीज वाराणसी
३. वाक्यपदीयम् (पदकाण्डम)-	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, डॉ. कुंदन कुमार
४. वाक्यपदीयम् (वाक्यकाण्डम) -	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, डॉ. कुंदन कुमार
५. वाक्यपदीयम् -	पं श्री रघुनाथ शर्मा
६. वाक्यपदीयम्-	पं. शिवशंकर अवस्थी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 C	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : खण्डकाव्य-कथा-महाकाव्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

अध्येताओं को संस्कृत खंडकाव्य एवं महाकाव्य का सम्यक् अवबोधन कराना।
काव्य मे निहित रस, छन्द, अलङ्कार एवं शैलियो का ज्ञान प्रदान करना

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात अध्येता गीति काव्य की छन्दोमयी माधुर्य का रसास्वादन, कथा साहित्य की शैलीगत उत्कृष्टता एवं महाकाव्य की पौराणिकता और ऐतिहासिकता से परिचित हो सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	कालिदासकृत- मेघदूतम् (पूर्वमेघः) प्रथमपद्यतः ३० पद्यानि पर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	कालिदासकृत- मेघदूतम् (पूर्वमेघः) ३१ पद्यतः पद्यन्तपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	कादम्बरीकथामुखम् - आरम्भतः विन्ध्याटवी-वर्णनपर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	कादम्बरीकथामुखम्- अगत्स्याश्रमवर्णनं यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम्- प्रथमो सर्गः।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. कालिदास कृतं मेघदूतम् -	डॉ. बलवन्त सिंह यादव
२. कालिदास कृतं मेघदूतम् -	डॉ. आर. वी. शास्त्री
३. कादम्बरीकथामुखम् -	पं विश्वनाथ त्रिपाठी
४. कादम्बरीकथामुखम् -	डॉ. राकेश शास्त्री
५. कादम्बरीकथामुखम् -	डॉ, शिवबालक द्विवेदी
६. कादम्बरीकथामुखम् -	डॉ. उमाकांत चतुर्वेदी
७. कादम्बरीकथामुखम् -	डॉ. नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी
८. अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् -	महंत रामचंद्र शास्त्री
९. अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् -	काशी नागरी प्रचारणी सभा
१०. अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् -	सूर्यनारायण चौधरी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : बौद्ध- मीमांसादर्शनञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को बौद्ध दर्शन की परम्परा से परिचित कराते हुए मीमांसा दर्शन के प्रौढ़ चिंतन का ज्ञान कराना। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य मीमांसा दर्शन की समृद्ध परंपरा को प्रकाश में लाना है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र-

बौद्ध दर्शन के सिद्धांत 'शून्यवाद' (विज्ञानवाद) को समझ सकेंगे। बौद्ध दर्शन एवं मीमांसा दर्शन की व्याख्या करने में सक्षम होंगे। भारतीय रीति-रिवाजों के लिए उपयोगी विभिन्न गतिविधियों के तर्क को समझने में सक्षम होंगे। आत्मा के अस्तित्व और दैवीय सशक्तिकरण को मुक्त कर इन्द्रिय भोग की उपेक्षा करने का अभ्यास कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१.नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिककारिका- १३ प्रकरणम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिक-कारिका- १८ प्रकरणम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिककारिका- २४ प्रकरणम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	मीमांसा-दर्शनस्य प्रमाणानि	15	1
पञ्चमो वर्गः	मीमांसा-दर्शनस्य प्रमेयानि	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. नागार्जुन कृत मूल माध्यमिक कारिका
२. मध्यमकशास्त्र और विग्रह व्यावर्तनी- यशदेव शल्य
३. मीमांसादर्शनम्- विधोदयभाष्यम्- आचार्य उदयवीर शास्त्री
४. जैमिनीय- मीमांसा-भाष्यम्- पं. युधिष्ठिर मीमांसक
५. मीमांसा दर्शन में प्रमाण विमर्श- डॉ. पवन व्यास

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 505	4

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020
सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु
षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:
(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

चतुर्थषण्मासिकसत्रम् (Fourth Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	**पाठ्यक्रम शीर्षक (Course Name) :**
MSNC – 511 (अनिवार्यम्)	व्याकरणमनुवादश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को संस्कृत व्याकरण की प्रक्रिया (व्यावहारिक पक्ष) से परिचित कराते हुए व्यावहारिक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कराना जिससे वे दैनन्दिन व्यवहार में संस्कृत भाषा का अधिकाधिक प्रयोग कर सके।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र संस्कृत व्याकरण की वैज्ञानिकता को समझ सकेंगे। संस्कृत ग्रन्थों के पठन- पाठन, लेखन तथा बोलचाल की भाषा के रूप में इसका प्रयोग एवं अनुप्रयोग कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	लघुसिद्धांतकौमुदी - कारकप्रकरणम् - कर्ता एवञ्च कर्मकारकम्।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	लघुसिद्धांतकौमुदी- कारक- प्रकरणम् - करणं तथा च सम्प्रदानकारकम्।	15	1
तृतीयो वर्ग:	लघुसिद्धांतकौमुदी- कारकप्रकरणम् - अपादानकारकं तथा च सम्बन्ध: (षष्ठी विभक्ति)।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	लघुसिद्धांतकौमुदी-कारकप्रकरणम्- - अधिकरणकारकम्।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	हिन्दीभाषाया: अनुच्छेदानां संस्कृतेऽनुवाद:।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. लघुसिद्धान्तकौमदी- व्याकरण प्रवेशिका- बाबूराम सक्सेना।
२. लघुसिद्धान्तकौमदी- कारकप्रकरणम्- प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र।
३. सरल रचना अनुवाद कौमुदी- डॉ. कपिल देव द्विवेदी।
४. प्रौढ़ रचना अनुवाद कौमुदी- डॉ. कपिल देव द्विवेदी।
५. लघुसिद्धान्तकौमदी- कारकप्रकरणम् (भैणी व्याख्या) डा. भीमसेन शास्त्री।
६. वाग्व्यवहार:- (प्रथम-दीक्षा) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय नव देहली।
७. व्यवहारप्रदीप:- (द्वितीय-दीक्षा) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय नव देहली।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC – 512 (अनिवार्यम्)	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** आधुनिक-संस्कृत-साहित्यम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक संस्कृत महाकाव्य काव्य की निरंतरता को उसके पारंपरिक शैलियों में प्रदर्शित करना है। छात्रों में ऐतिहासिक राष्ट्रवादी और धार्मिक प्रवृत्ति का समावेश करना है और यह दिखाने का प्रयास करना है कि संस्कृत काव्य एक जीवित परंपरा कैसे है।

अधिगम (Learning / Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र आधुनिक संस्कृत गद्य के प्रमुख नमूनों का ज्ञान प्राप्त करेंगे और कविता की संस्कृत काव्य के क्षेत्र में नए दृष्टिकोण की समझ होगी। काव्य के आधुनिक और प्राचीन विचारों की तुलना कर सकेंगे। निर्धारित ग्रंथों को समझाने और समालोचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता हासिल करेंगे।

क्रेडिट: **5**	पूर्णांक: **75 + 25**	उत्तीर्णांक: **33** प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - **75**

वर्गः	**पाठ्यवस्तु**	**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्गः	आधुनिक-संस्कृतमहाकाव्यानां महाकवि-कृतीनां च परिचयः। जानकीजीवनम्, वामनावतरणम्, उत्तरसीताचरितम्, स्वातन्त्र्यसम्भवम् कुमारविजयम, प्रो० राजेन्द्रमिश्रः, प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी	15	1
द्वितीयो वर्गः	- आधुनिक-संस्कृतगीतानि, गीतिकाव्यानि च।	15	1
तृतीयो वर्गः	आधुनिक-संस्कृतकथा, उपन्यास-साहित्यानि च।	15	1
चतुर्थो वर्गः	आधुनिक-संस्कृतनाट्य-साहित्यानि	15	1
पञ्चमो वर्गः	आधुनिक-स्तोत्रकाव्य-परम्परा।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. विशति शताब्दी संस्कृत काव्यामृत- प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
२. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी
३. संस्कृत साहित्य सौरभ.. प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी
४. नया साहित्य तथा नया साहित्यशास्त्र प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी
५. संस्कृत कविता की लोकधर्मी परम्परा- प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी
६. अधुनिकसंस्कृतसाहित्येतिहासः- देवर्षि कलानाथ शास्त्री
७. आधुनिक संस्कृत साहित्य काव्य परम्परा- केशवनाथ मुसलगाँवकर
८. आधुनिक संस्कृत साहित्य शास्त्रसमीक्षा- प्रो रमाकांत पाण्डेय
९. अर्वाचीन संस्कृतमहाकाव्यनुशीलनम्- प्रो रहस बिहारी द्विवेदी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 A	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) वेदसंहिता एवं ब्राह्मणमीमांसा

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वैदिक संहिताओं के विशिष्ट प्रतिपाद्य विषय से अवगत कराना एवं ब्राह्मण ग्रंथों के वैशिष्ट्य से परिचित कराते हुए यज्ञोपयोगी मीमांसा दर्शन का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र ऋग्वेद संहिता शुक्ल यजुर्वेद संहिता ब्राह्मण ग्रन्थ में वर्णित वैदिक संस्कृति एवं परंपरा से परिचित हो सकेंगे, तथा अर्थसंग्रह में वर्णित द्रव्य, पदार्थ, ज्ञान, सामान्य एवं विशेष कर्म आदि का सम्यक अवबोधन करेंगे|

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या: 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१. ऋग्वेदसंहिता- पूषनसूक्तम् (६.५३), सोमसूक्तम् (९.८०), पितृसूक्तम् (१०.१५)।	15	1
द्वितीयो वर्गः	शुक्लयजुर्वेदः- माध्यन्दिनसंहिता- द्वितीयोऽध्यायः कण्डिकात् १८ कण्डिकापर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	.अथर्ववेदसंहिता- शालानिर्माणसूक्तम् (३.१२), सर्पविषनाशनम् (५.१३), राष्ट्रसभा (७.१३)।	15	1
चतुर्थो वर्गः	शतपथब्राह्मणः (प्रथमो काण्डः)- प्रथमोऽध्यायः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अर्थसंग्रहः- आदितो विनियोगविधिपर्यन्तम् एवञ्च प्रयोगविधेः सामान्य-परिचयः।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. ऋग्वेदसंहिता - पंडित राम गोविंद त्रिवेदी
२. ऋग्वेद - डॉ गंगा सहाय शर्मा
३. ऋग्वेद संहिता यथार्थ अनुवाद महेश चंद्र माहेश्वरी प्रसन्न चंद गौतम
४. अथर्ववेदसंहिता - पंडित रामस्वरूप शर्मा गौड़
५. शतपथ ब्राह्मण – डॉ. सुंदर नारायण झा
६. यजुर्वेद संहिता- मूलमात्र चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान
७. यजुर्वेद संहिता पंडित ईश्वर चंद्र
८. यजुर्वेद संहिता - महर्षि दयानंद सरस्वती
९. ऋग्वेद संहिता हिंदी भावार्थ सहित- पंडित श्री राम शर्मा अचार्य
१०. अर्थ संग्रह- श्री भास्कर
११. अर्थ संग्रह- डॉ. कामेश्वर नाथ मिश्र
१२. अर्थ संग्रह – डॉ. दयाशंकर शास्त्री

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : संस्कृत-व्याकरणदर्शनम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण दर्शन की प्रौढ़ परंपरा से परिचित कराते हुए उत्कृष्ट व्याकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र संस्कृत व्याकरण के गूढ़ से गूढ़तम व्याकरण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे। व्याकरण में शास्त्रार्थ करने की प्रवृत्ति विकसित होगी, व्याकरण के सूत्रों का निगमन छात्र कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मध्यसिद्धांतकौमुदी- अदादि तः लकारार्थप्रक्रिया पर्यंतन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	मध्यसिद्धांतकौमुदी- कृत्यप्रक्रिया	15	1
तृतीयो वर्गः	मध्यसिद्धांतकौमुदी- केवलसमासात् समासान्तपर्यंतन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	परमलघुमञ्जूषा- आदितो तादात्मयनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	परमलघुमञ्जूषा- लक्षणानिरूपणं स्फोटसिद्धान्तश्च।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. वरदराजाचार्यकृता मध्यसिद्धांतकौमुदी-	आचार्य विश्वनाथ शास्त्री।
२. वरदराजाचार्यकृता मध्यसिद्धांतकौमुदी-	व्याकरणाचार्य: पं. कालीकांत झा
३. मध्य सिद्धांत कौमुदी -	प्रो.आद्या प्रसाद मिश्र
४. मध्य सिद्धांत कौमुदी -	वरदराजाचार्य
५. मध्य सिद्धांत कौमुदी-	गुरु प्रसाद शास्त्री
६. नागेशभट्टेन प्रणीता परमलघुमञ्जूषा -	पं. लोकमणि दाद्याल
७. वरदराजाचार्यकृता मध्यसिद्धांतकौमुदी -	
८. लघुसिद्धांतकौमुदी भैमी व्याख्या -	भीमसेन शास्त्री
९. परमलघुमञ्जूषा -	पंडित बंशीधर मिश्र

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 C	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) दृश्यकाव्यं छन्दोग्रन्थश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विभिन्न घटकों जैसे कथानक अभिनेता और नाटकीय आलोचना के रस से परिचित कराना है। इन पाठ्यक्रमों के दूसरे भाग में दो नाटक मृच्छकटिक और उत्तररामचरितम् के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जो छात्रों को कवियों के महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदान से परिचित कराने के लिए है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्रों को विभिन्न शब्दावली यानी कथानक अभिनेता और रस आदि के बारे में गहन ज्ञान होगा। आलोचना के लिए एक नाटकीय रचनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मृच्छकटिकम्- प्रथमाङ्कात् तृतीयाङ्कपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	मृच्छकटिकम्- चतुर्थाङ्कात् अन्तपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	उत्तररामचरितम्- तृतीयाङ्कः	15	1
चतुर्थो वर्गः	मात्रिकछन्दांसि- आर्याप्रकरणम्- आर्यासामान्य-पथ्या- विपुला-चपला-मुखचपला-जघनचपलालक्षणानि च। अनुष्टुपप्रकरणम्- वक्त्र- पथ्यावक्त्र-विपुला-भविपुला-रविपुलाश्च।	15	1
पञ्चमो वर्गः	त्रिष्टुपप्रकरणम्- इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा-उपजाति-रथोद्धता-स्वागताश्च द्रुतविलम्बितम-भुजंगप्रयातम-प्रियंवदा-मणिमाला-स्रग्विणी-वसन्ततिलका-	15	1

●	मालिनी-शिखरिणी-मन्दाक्रान्ता- शार्दूलविक्रीडितञ्च।		

संस्तुत-ग्रन्था:

१. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्- आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र।
२. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्- आचार्य श्रीनिवास शास्त्री।
३. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्- डॉ. जयशंकर लाल त्रिपाठी
४. भवभूति विरचितम् उत्तररामचरितम् - प्रो. इन्द्र
५. भवभूति विरचितम् उत्तररामचरितम् - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।
६. The Uttarramcharitam of Bhavbhuti-. M. R. Kale
७. Mricchakatikam of Sudraka- R. D. Karnadhar

● **पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):** MSNE – 513 D	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** न्यायसूत्र-योगदर्शनञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को न्याय दर्शन की समृद्ध परंपरा से परिचित कराते हुए योग दर्शन के सिद्धांतों का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र गौतम न्याय सूत्रों एवं पतंजलि योग दर्शन सूत्रों की व्याख्या कर सकेंगे तथा अष्टांग योग एवं प्राणायाम के अभ्यास कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	गौतम- न्यायसूत्रम् - प्रथमाह्निको - प्रथमसूत्रात् ११ सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	गौतम- न्यायसूत्रम् - प्रथमाह्निको - १२ सूत्रात् २९ सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	गौतम- न्यायसूत्रम् - प्रथमाह्निको - ३० सूत्रात् अन्तिमं सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	पतंजलियोगदर्शनम्- योगसूत्रम्- समाधिपादः- प्रथम सूत्रात्- २४ सूत्रं यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	पतंजलियोगदर्शनम्- योगसूत्रम्- समाधिपादः- २५ सूत्रात्- अन्तिमं सूत्रं यावत् एवञ्च साधनपादः- प्रथमसूत्रात्- १५ सूत्रों यावत्।	15	1

संस्तुत- ग्रन्था:

१. गौतमन्यायसूत्रम्- (वात्स्यायन भाष्यसहितम् प्रथमोऽध्याय:) –
२. पतंजलियोगसूत्रम् (व्यासभाष्यसहितम्) समाधि एवञ्च साधनपाद:।
३. महर्षिगौतमप्रणीतं न्यायदर्शनम् (वात्स्यायनभाष्यसहितम्)- आचार्य बुद्धिराज शास्त्री
४. न्याय दर्शन - आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
५. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन - डॉक्टर सहाय
६. भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप - श्री प्रकाश पाण्डेय

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 A	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) वेदाङ्गानुक्रमणी

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदांग, अनुक्रमणी साहित्य तथा मूल वैदिक छन्दों का ज्ञान कराना। वेद मे प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति एवं निर्वचन का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र वैदिक छन्दों का ज्ञान, शब्दों की व्युत्पत्ति एवं निर्वचन का ज्ञान प्राप्त कर वैदिक मंत्रों का स्वरबद्ध गान कर सकेंगे और वैदिक परम्परा को संरक्षित कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१. निरूक्तम्- प्रथमोऽध्यायः- प्रथमतः तृतीयपादं यावत्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	निरूक्तम्- प्रथमोऽध्यायः- प्रथमतः तृतीयपादं यावत्।	15	1
तृतीयो वर्गः	निरूक्तम्- द्वितीयोऽध्यायः- प्रथमपादःसम्पूणम्, एवञ्च सप्तमोऽध्यायः प्रथमपादतो तशचतुर्थपादं यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	बृहद्देवता- प्रथमोऽध्यायः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	. वैदिक- छन्दांसि - गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-त्रिष्टुप्, जगती-वृहती-पङ्क्तिश्च।	15	1

संस्तुतग्रन्था:

१.निरुक्तम्- (दुर्गाचार्य भाष्यसहितम्)
२. निरुक्त- डॉ उमाशंकर शर्मा ऋषि
३. निरुक्तम् - डॉ कपिल देव द्विवेदी
४. निघण्टु एवं निरुक्त - लक्ष्मण स्वरूप
५. निरुक्त मीमांसा - शिव नारायण शास्त्री
६. वैदिक व्याकरण- डॉ. रामगोपाल वर्मा
वैदिक व्याकरण- डॉ उमेश चंद्र पाण्डेय

● पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : व्याकरणमीमांसा

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण की शास्त्र परंपराओं का ज्ञान कराते हुए नागेशभट्ट की परिभाषाओं एवं श्रीमद् कौण्डभट्ट के लकारार्थ प्रक्रिया का सम्मान अवबोधन कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र व्याकरण मीमांसा के विश्लेषणात्मक एवं समालोचात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर:- प्रथमतन्त्रम्- प्रथमत: तृतीयपरिभाषा-पर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	नागेशभट्टविरचिचि: परिभाषेन्दुशेखर:- प्रथमतन्त्रम्- चतुर्थत: षष्ठमपरिभाषा-पर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर:- प्रथमतन्त्रम्- सप्तमत: दशमपरिभाषा-पर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	. वैयाकरणभूषणसार:- लकारार्थस्य प्रथमकारिकामात्रम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वैयाकरणभूषणसार:- लकारार्थस्य द्वितीयकारिकामात्रम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:-

१. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर:- सुबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित-	आचार्य विश्वनाथ मिश्र
२. श्रीमद् कौण्डभट्टविरचित:- वैयाकरणभूषणसार:-	पं. चन्द्रिका प्रसाद द्विवेदी
३. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: -	जयकृष्ण दास हरिदास गुप्त
४. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: -	ताल्या शास्त्री
५. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: -	श्री गोविंद शर्मा
६. वैयाकरणभूषणसार: -	श्री प्रभाकर मिश्र
७. वैयाकरणभूषणसार: -	पंडित नंदकिशोर शास्त्री
८. वैयाकरणभूषणसार: -	श्री भीमसेन शास्त्री
९. वैयाकरणभूषणसार: -	आचार्य देवदत्त शर्मा
१०. वैयाकरण भूषणसार दीपिका -	श्री राम किशोर त्रिपाठी

● **पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):** MSNE – 514 C	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** काव्यमीमांसा गद्यकाव्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को धन्यलोक के सिद्धांत एवं गद्य काव्य से परिचित कराना है। ध्वन्यालोक ध्वनि के विचार के बारे में बात करता है। कविता की अभिव्यक्ति पर सबसे महत्वपूर्ण तत्व होने के कारण ध्वनि के विचार या सुझाव की आवश्यकता होती है।

अधिगम (Learning / Outcome):

निर्धारित पाठ और उसमें मौजूद शर्तों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे। इस ज्ञान को काव्य में विचारोत्तेजक अर्थ के आलोक में समालोचनात्मक विश्लेषण के लिए लागू करने में सफल होंगे। गद्य के भावों की सराहना और आनंद लेने में सक्षम होंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ध्वन्यालोकः (प्रथमोद्योतः) प्रथमकारिकात् १२ कारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	ध्वन्यालोकः (प्रथमोद्योतः) द्वादशकारिकात् त्रयोदशकारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्। तथा च चतुर्थोद्योतः प्रथमकारिकातः पञ्चमकारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	ध्वन्यालोकः - चतुर्थोद्योतः षष्ठमकारिकात् अन्तिमां कारिकां यावत्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1

चतुर्थो वर्गः	हर्षचरितम्- प्रथमोच्वासः आदितो 'अष्टादशवर्षदेशीयं युवानमद्राक्षीत्' पर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	हर्षचरितम्- प्रथमोच्वासः - 'पार्श्वे च तस्य' इत्यतः अन्तपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:-

१. आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक:-	आचार्य विश्वैश्वर
२. आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक: -	डॉ. गंगासागर राय
३. आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक: -	आचार्य लोकमणि दाहाल
४. हर्षचरितम् -	आचार्य श्री मोहन देव पंत
५. हर्षचरितम् -	पंडित श्री जगन्नाथ पाठक

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 D	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** माण्डूक्यकारिका.शाङ्करवेदान्तश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदांत दर्शन के मूलभूत सिद्धांत से परिचित कराते हुए 'शङ्कराचार्य की दृष्टि में अद्वैत वेदांत' से परिचित कराना तथा माण्डूक्यकारिका के प्रकरणों एवं शाङ्करभाष्य के महत्व तथा अवदान का बोध कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस कोर्स के अध्ययन के फलस्वरुप छात्र वेदांत दर्शन के प्रतिपाद्य विषय अद्वैतवाद को समझ सकेंगे, तथा निराकार ब्रह्म का आत्मसाक्षात्कार कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	माण्डूक्यकारिका- प्रथमप्रकरणं सम्पूर्णम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	माण्डूक्यकारिका- चतुर्थ प्रकरणं सम्पूर्णम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	ब्रह्मसूत्रम्- प्रथमसूत्रम् (शाङ्करभाष्यम्)।	15	1
चतुर्थो वर्गः	ब्रह्मसूत्रम्- द्वितीयतृतीयश्च सूत्रम् (शाङ्करवेदान्तम्)।	15	1
पञ्चमो वर्गः	. चतुःसूच्यां शाङ्करभाष्यस्य महत्वं योगदानश्च।	15	1

संस्तुत- ग्रन्था:-

१. माण्डूक्यकारिका-	स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती
२. ब्रह्मसूत्रम्-	महर्षि: बादरायण:
३. ब्रह्मसूत्रम्-	हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
४. गौड़पाद माण्डूक्यकारिका-	शंकराचार्य भाष्य सहित मूलमात्र
५. गौड़पादभाष्यकारिका -	शंकर भाष्य सहित आनंदगिरि टीका

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 515	4